A Report about Training Programme on
“Cultivation of important high value temperate medicinal plants”
held at Ropa Sainj, Kullu (H.P.) on 19th February, 2019

Himalayan Forest Research Institute, Shimla organized one day training programme on **‘CULTIVATION OF IMPORTANT HIGH VALUE TEMPERATE MEDICINAL PLANTS’** for various stakeholders at Ropa Sainj, Kullu (H.P.) on 19th February, 2019. This training programme was organized under National Medicinal Plants Board, New Delhi funded project titled “Evaluation of genetic superiority and stability of identified high active ingredient content accessions of *Picrorhiza kurroa* Royle ex Benth., *Valeriana jatamansi* Jones and *Podophyllum hexandrum* Royle through multi-location trials and promotion of their cultivation amongst rural communities”. A total of 45 participants, including members of NGOs, Panchayats, progressive farmers and frontline staff of Himachal Pradesh Forest Department of Kullu district, actively participated in this training programme.

At the outset, **Sh. Jagdish Singh, Scientist-F** and programme coordinator briefed about the training programme and highlighted the activities of Himalayan Forest Research Institute and delivered a lecture on ‘Identification and uses of important high altitude medicinal plants, Inter-cultivation of temperate medicinal plants with horticulture crops: an option for augmenting rural income, and Cultivation of *Podophyllum hexandrum* (Bankakdi)’. Thereafter, **Dr. Saurabh Sharma, Deputy Director RCFC (NR-I)** RIISM, Jogindernagar talked about the process of cluster formation of farmers for seeking financial help from NMPB to take up cultivation of medicinal plants. He informed that farmers can sell their produce through **e- charak**, a portal developed by NMPB. After that, **Dr Sandeep Sharma, Scientist-G,** HFRI gave a presentation on ‘Commercial cultivation of important high altitude medicinal plants species, Modern nursery techniques and production of compost and vermi-compost for organic cultivation of medicinal plants, and Marketing of medicinal plants’. **Dr Madan Lal, Botanist from IISM, Jogindernagar** talked about the various activities of SMPB and production of quality planting stock of medicinal plants for distribution amongst the various stakeholders. **Sh. Lal Chand, CEO, Shri Rishi Prasher Cooperative Society, Bhunter Kullu (H.P.)** shared his valuable experience about the group formation of farmers and raising of quality planting stock of *Aconitum heterophyllum* (Patish) and *Saussurea costus* (Kuth) at Varsheni, Manikaran Valley. He informed that he is ready to distribute the planting stock of the same amongst farmers for taking up cultivation of these medicinal plant species. **Sh. Tej Singh, R.O., Sainj** talked about the medicinal wealth of GHNP and potential of their cultivation in the farmer’s field.

The participants were also taken to the Ropa, Sainj nursery for demonstration of macro-proliferation techniques of *Picrorhiza kurroa* (Karu) and *Valeriana jatamansi* (Mushkbala).

In the closing session, the relevant queries of the participants were duly addressed through expert opinion of all the resource persons and certificates were distributed to the participants. While expressing their opinion, participants said that they found this training programme very useful. The training programme ended with a formal vote of thanks by Sh. Jagdish Singh.

****

Glimpses of Training Programme

H.P. Forest Department (Wildlife Wing)
FOREST REST HOUSE
Ropa, Sainj
77°21' 20.61'E
31°45' 57.79'N
Altitude 1520 m
DISTT. KULLU, HIMACHAL PRADESH
GREAT HIMALAYAN NATIONAL PARK
समशीतोषण क्षेत्र के उच्च उपयोगिता वाले महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक: 19 फरवरी, 2019
स्थान: रोपा सैंज, कुल्लू (हि.प्र.)
प्रायोजक:
राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, भारत सरकार, नई दिल्ली
आयोजक:
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
शिमला-171013 (हि.प्र.)

समशीतोषण क्षेत्र के उच्च उपयोगिता वाले महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक: 19 फरवरी, 2019
स्थान: रोपा सैंज, कुल्लू (हि.प्र.)

समशीतोष्ण क्षेत्र के	

Media Coverage

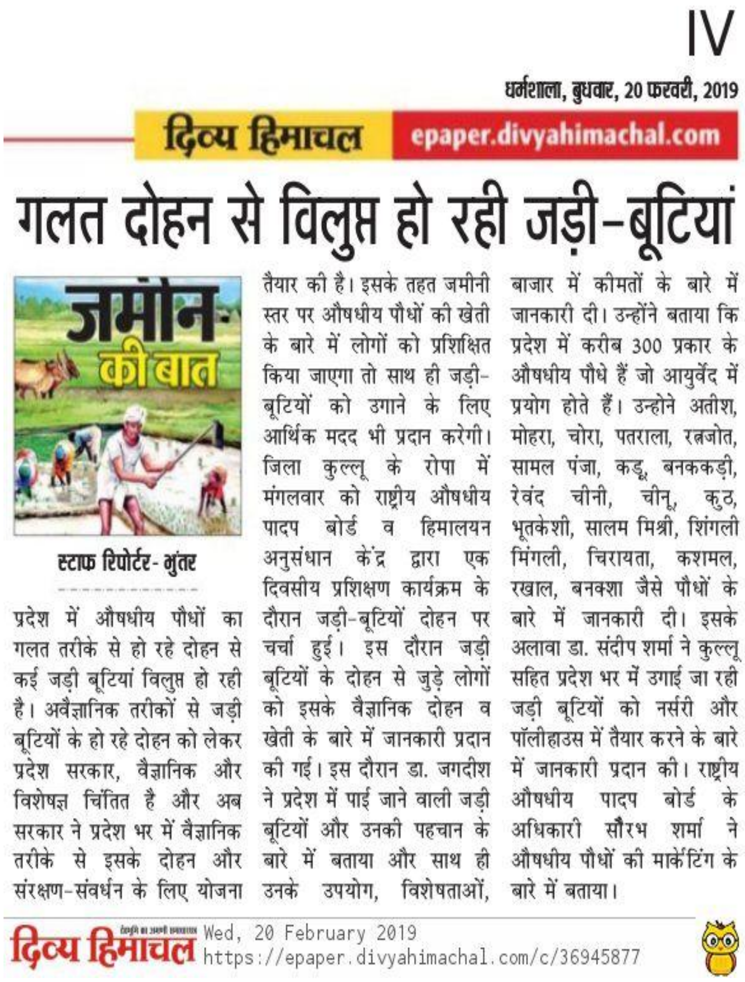

IV

धर्मशाला, बुधवार, 20 फरवरी, 2019

दिव्य हिमाचल epaper.divyahimachal.com

गलत दोहन से विलुप्त हो रही जड़ी-बूटियां

जमीन की बात

स्टाफ रिपोर्टर- भुंतर

प्रदेश में औषधीय पौधों का गलत तरीके से हो रहे दोहन से कई जड़ी बूटियां विलुप्त हो रही है। अवैज्ञानिक तरीकों से जड़ी बूटियों के हो रहे दोहन को लेकर प्रदेश सरकार, वैज्ञानिक और विशेषज्ञ चिंतित है और अब सरकार ने प्रदेश भर में वैज्ञानिक तरीके से इसके दोहन और संरक्षण-संवर्धन के लिए योजना तैयार की है। इसके तहत जमीनी स्तर पर औषधीय पौधों की खेती के बारे में लोगों को प्रशिक्षित किया जाएगा तो साथ ही जड़ी-बूटियों को उगाने के लिए आर्थिक मदद भी प्रदान करेगी। जिला कुल्लू के रोपा में मंगलवार को राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड व हिमालयन अनुसंधान केंद्र द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान जड़ी-बूटियों दोहन पर चर्चा हुई। इस दौरान जड़ी बूटियों के दोहन से जुड़े लोगों को इसके वैज्ञानिक दोहन व खेती के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान डा. जगदीश ने प्रदेश में पाई जाने वाली जड़ी बूटियों और उनकी पहचान के बारे में बताया और साथ ही उनके उपयोग, विशेषताओं, बाजार में कीमतों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रदेश में करीब 300 प्रकार के औषधीय पौधे हैं जो आयुर्वेद में प्रयोग होते हैं। उन्होने अतीश, मोहरा, चोरा, पतराला, रत्नजोत, सामल पंजा, कड्डू, बनककड़ी, रेवंद चीनी, चीनू, कुठ, भूतकेशी, सालम मिश्री, शिंगली मिंगली, चिरायता, कशमल, रखाल, बनक्शा जैसे पौधों के बारे में जानकारी दी। इसके अलावा डा. संदीप शर्मा ने कुल्लू सहित प्रदेश भर में उगाई जा रही जड़ी बूटियों को नर्सरी और पॉलीहाउस में तैयार करने के बारे में जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के अधिकारी सौरभ शर्मा ने औषधीय पौधों की मार्केटिंग के बारे में बताया।

दिव्य हिमाचल Wed, 20 February 2019
https://epaper.divyahimachal.com/c/36945877

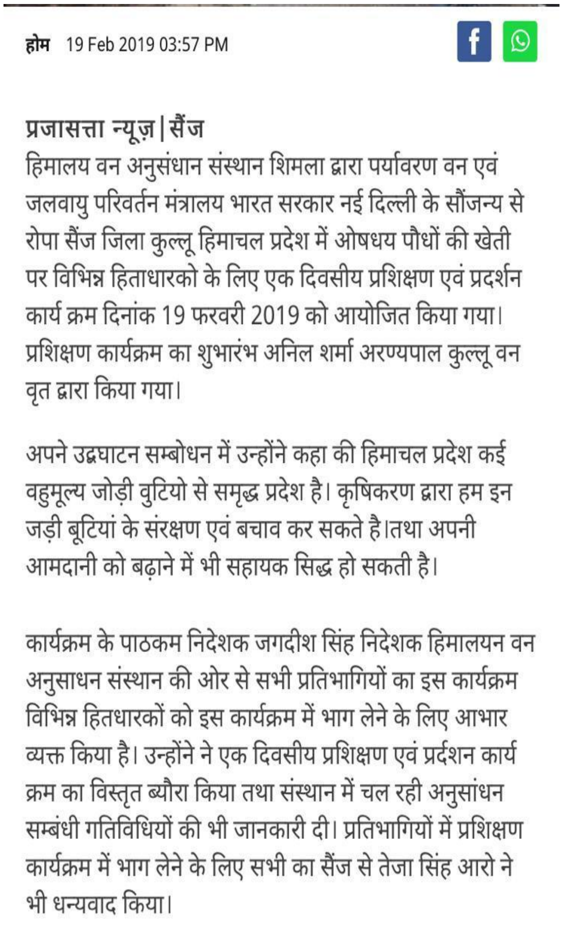

होम 19 Feb 2019 03:57 PM

प्रजासत्ता न्यूज़|सैंज

हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली के सौंजन्य से रोपा सैंज जिला कुल्लू हिमाचल प्रदेश में ओषधय पौधों की खेती पर विभिन्न हिताधारको के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्य क्रम दिनांक 19 फरवरी 2019 को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ अनिल शर्मा अरण्यपाल कुल्लू वन वृत द्वारा किया गया।

अपने उद्घाटन सम्बोधन में उन्होंने कहा की हिमाचल प्रदेश कई वहुमूल्य जोड़ी वुटियो से समृद्ध प्रदेश है। कृषिकरण द्वारा हम इन जड़ी बूटियां के संरक्षण एवं बचाव कर सकते है।तथा अपनी आमदानी को बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध हो सकती है।

कार्यक्रम के पाठकम निदेशक जगदीश सिंह निदेशक हिमालयन वन अनुसाधन संस्थान की ओर से सभी प्रतिभागियों का इस कार्यक्रम विभिन्न हितधारकों को इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया है। उन्होंने ने एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रर्दशन कार्य क्रम का विस्तृत ब्यौरा किया तथा संस्थान में चल रही अनुसांधन सम्बंधी गतिविधियों की भी जानकारी दी। प्रतिभागियों में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभी का सैंज से तेजा सिंह आरो ने भी धन्यवाद किया।